ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

गांधी विचार में है दुनिया को बदलने की शक्ति - डॉ. रामेश्वर उरांव

हिंदी विश्वविद्यालय में नवनिर्मित बिरसा मुंडा छात्रावास का उरांव ने किया उदघाटन

वर्धा दि. 19 जनवरी 2012: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में नवनिर्मित धरतीपुत्र बिरसा मुण्डा छात्रावास का उदघाटन करते हुए राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष डॉ. रामेश्वर उरांव ने कहा कि छात्र जीवन से ही मैं मार्क्स और गांधी के विचारों से प्रेरित रहा हूं। खून गर्म था तो समझा कि मार्क्सिज्म ठीक है पर आज मैं गांधी जी के मूल्यों से प्रेरित हूं। उन्होंने कहा कि उथलपूथल भरी दुनिया को बदलने के लिए गांधी के प्रेम, अहिंसा, शांति और सत्य के विचारों की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के नॉर्थ कैम्पस में सम्पन्न हुए इस समारोह की अध्यक्षता कुलपति विभूति नारायण राय ने की।

डॉ. उरांव ने विश्वविद्यालय के विकास का हवाला देते हुए कुलपति विभूति नारायण राय की ओर इशारा किया और कहा कि आपके कुलपति विजनरी के साथ-साथ लगनशील हैं। उन्हीं की लगन से इस विश्वविद्यालय का विकास इतने कम समय में बडी तेजी के साथ हुआ है। आजकल ब्यूरोक्रेसी और शासकों में विजन तो है परंतु लगन की कमी है। बजट का पैसा ही खर्च नहीं कर पाते हैं। आपके वाइस चांसलर में लगन जबरदस्त है यहां का बदलाव जो देख रहे हैं वह उनकी लगन की देन है। राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की योजनाओं के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि 2004 में अनुसूचित जनजाति आयोग बना। पहले अनुसूचित जाति व जनजाति आयोग एक साथ था। यह आयोग एक संवैधानिक संस्था है। संविधान निर्माताओं ने आयोग को वह शक्ति दी जिससे अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और शैक्षिक विकास हो सके। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज के वेलफेअर के साथ उन्हें प्रोटेक्शन की भी आवश्यकता है ताकि जिस पर वे जीवनयापन कर रहे है उस जल, जंगल और जमीन की रक्षा हो सके।

माइनिंग बिल, भूमि अधिग्रहण बिल और फूड सेक्यूरिटी बिल का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि सबसे ज्यादा गरीबी आदिवासियों में है। आज भी सरकारी आंकडे कहते है कि 46 प्रतिशत आदिवासी बीपीएल में हैं। तीनों कानून बनेंगे जो आदिवासियों के जनजीवन को प्रभावित करेंगे। उन्होंने कहा कि आदिवासियों की लिविंग कन्डीशन्स के बारे में भारत के राष्ट्रपति को अवगत कराना भी आयोग का एक महत्वपूर्ण कार्य है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से आज तक की हालात पर नजर डाले तो पता चलता है कि आदिवासी इलाकों में बिजली नहीं है, सड़के नहीं है।

स्कूल है तो शिक्षक नही और शिक्षक है तो किताबें नहीं। ऐसी स्थिति में आदिवासियों का जीवनस्तर कैसे सुधर सकता है।

उन्होंने आदिवासी इलाकों नक्सलवाद का मुद्दा उठाते हुए कहा कि जब तक असंतोष दूर नहीं किया जाएगा तब तक इस समस्या का समाधान संभव नहीं है और इसका निदान पुलिस नहीं हो सकती है। गरीबी, बेकारी, बेबसी को दूर करना ही इसका सही निदान हो सकता है। बिरसा मुंडा के बारे में उन्होंने कहा कि वे अन्याय के खिलाफ लड़नेवाले थे। क्रांति की चिंगारी की अलख जगाने वाले थे। बिरसा मुण्डा जी ने समय को बदल दिया। पुरूष वह जो समय के साथ चले। महापुरूष वह जो समय को बदल दे। बिरसा मुण्डा जी का देन था कि उनकी लड़ाई आदिवासी की जमीन में थी। पुलिस का जुर्म, जमींदारों का जुर्म की वजह से उनका विद्रोह जगा था। अपने राजनीतिक जीवन के बारे में उन्होंने कहा कि राजनीति मेरे जीवन में लोगों से मिलने के लिए एक प्लेटफार्म की तरह है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि मैं नहीं समझता कि बिरसा मुण्डा के नाम पर बने छात्रावास के उदघाटन के लिए डॉ.रामेश्वर उरांव से कोई अन्य उपयुक्त व्यक्ति हमें मिलते। उन्होंने बिरसा मुंडा को श्रम की महत्ता जानने वाला व्यक्ति कहा। महाश्वेता जी ने बिरसा को नायक बनाया तो हम जान पाए। शहरी इलाकों में जो प्रतिरोध कर रहे थे उनको जान रहे थे पर दुर्गम इलाकों में जो प्रतिरोध कर रहे थे उनको हम नहीं जान रहे थे। हमारे लिए आदिवासी के संदर्भ में पिकनिक के आनंद की वस्तु बन गई है का जिक्र करते हुए कहा कि आज इसका उपयोग सिर्फ मनोरंजन के लिए कर रहे हैं। आज तमाम विकास के जुमले में भी संस्कृति को नष्ट कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारा विकास किस प्रकार से आदिवासी लोगों के विनाश का कारण बन रहा है।

इस दौरान मंच पर प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन, कुलसचिव संजय गवई, कुलानुशासक प्रो. सूरज पालीवाल, छात्रावास अधीक्षक धरवेश कठेरिया उपस्थित थे। स्वागत वक्तव्य में प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन ने विवि के विकास कार्य के हवाला देते हुए कुलपति राय की दूरदृष्टी की सराहना की। छात्रावास के उदघाटन पहले अतिथियों ने बिरसा मुण्डा की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर डॉ. उरावं, कुलपति राय, प्रतिकुलपति तथा कुलसचिव गवई ने परिसर में पौधारोपण भी किया। मुख्य समारोह के पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम में दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र नागपुर द्वारा आदिवासी लोक नृत्य प्रस्तुति की प्रस्तुति की गई। संचालन बिरसा मुण्डा छात्रावास के अधीक्षक धरवेश ने किया तथा कुलानुशासक प्रो.सूरज पालीवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर अध्यापक, कर्मी तथा छात्र बडी संख्या में उपस्थित थे।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी